IJAER/ May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

जेहाद समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर प्रेमचंद का दृष्टिकोण

बबिता योगी

शोधछात्रा

डॉ संजु झा

शोधनिर्देशिका

महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय जयपुर

सार

मुंशी प्रेमचंद, हिंदी साहित्य के एक महान उपन्यासकार और कहानीकार, ने अपने लेखन में जेहाद और समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर अपनी गहरी और विचारोत्तेजक दृष्टिकोण प्रस्तुत की है। प्रेमचंद जेहाद को एक धार्मिक कर्तव्य मानते थे, लेकिन वे इसे हिंसा और आतंक से नहीं जोड़ते थे। उनके अनुसार, जेहाद का अर्थ है बुराई के खिलाफ संघर्ष करना, चाहे वह बुराई समाज में हो या व्यक्ति के भीतर। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में जेहाद के विभिन्न रूपों को दर्शाया है, जिनमें सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, और गरीबों और वंचितों के लिए लड़ना शामिल है। प्रेमचंद ने अपने समय की सामाजिक व्यवस्था को बड़ी गहराई से देखा और समझा था। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिवाद, धार्मिक भेदभाव, छुआछूत, गरीबी, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा जैसी बुराइयों पर अपनी लेखनी के माध्यम से करारा प्रहार किया। उन्होंने 'गोदान', 'निर्मला', 'रंगभूमि', और 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों और 'कफन', 'पूस की रात', और 'ईदगाह' जैसी कहानियों में समाज के इन पहलुओं को उजागर किया और लोगों को इनके खिलाफ जागरूक करने का प्रयास किया। प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' जेहाद जैसे जटिल सामाजिक मुद्दे पर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी करती है। यह कहानी हमें दिखाती है कि कैसे गरीबी और सामाजिक अन्याय लोगों को कट्टरपंथी विचारधाराओं की ओर धकेल सकते हैं।

मुख्य शब्द:

जेहाद, समकालीन, सामाजिक, व्यवस्था

भूमिका

'पूस की रात' एक गरीब किसान हल्कू की कहानी है, जो ठंड से बचने के लिए अपने खेत में आग जलाता है। लेकिन, इस आग से उसकी सारी फसल बर्बाद हो जाती है। यह कहानी हमें हल्कू की गरीबी और लाचारी का एहसास कराती है। प्रेमचंद की यह कहानी हमें जेहाद के मूल कारणों को समझने में मदद करती है। जेहाद अक्सर उन लोगों द्वारा किया जाता है जो समाज में हाशिए पर होते हैं और जिनके पास कोई आवाज नहीं होती है। हल्कू की तरह, यह लोग भी गरीबी और अन्याय का शिकार होते हैं। जब लोगों के पास खोने के लिए कुछ नहीं होता है, तो वे आसानी से कट्टरपंथी विचारधाराओं में शामिल हो सकते हैं।

प्रेमचंद 'पूस की रात' के माध्यम से हमें जेहाद के खतरे से अवगत कराते हैं। वह हमें दिखाते हैं कि कैसे गरीबी और सामाजिक अन्याय लोगों को हिंसक बना सकते हैं। प्रेमचंद का मानना था कि जेहाद का मुकाबला करने के लिए हमें समाज में न्याय और समानता स्थापित करनी होगी।

'पूस की रात' एक ऐसी कहानी है जो आज भी प्रासंगिक है। यह कहानी हमें जेहाद के मूल कारणों को समझने और उनका मुकाबला करने के लिए प्रेरित करती है। प्रेमचंद का यह मानना था कि शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से हम समाज को बदल सकते हैं और एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

प्रेमचंद की कहानी "ईदगाह" भारतीय समाज के एक महत्वपूर्ण पहलू, जेहाद, पर प्रकाश डालती है। यह कहानी हामिद नामक एक छोटे बच्चे के ईदगाह जाने और वहाँ खिलौने खरीदने के बजाय अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदने के फैसले के इर्द-गिर्द घूमती है।

हामिद और उसकी दादी गरीबी में रहते हैं। हामिद के पास खिलौने खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, लेकिन वह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदने का फैसला करता है क्योंकि वह देखता है कि उनकी दादी को रोटी बनाते समय कितनी तकलीफ होती है। हामिद एक बच्चा है, लेकिन वह बड़ों की तरह समझदारी और जिम्मेदारी दिखाता है। वह अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करता है और अपनी दादी की जरूरतों को पहले रखता है। हामिद अपनी दादी से बहुत प्यार करता है। वह उनकी देखभाल करना चाहता है और उन्हें खुश करना चाहता है।

ईदगाह में सभी धर्मों के लोग एक साथ आते हैं। यह कहानी धार्मिक एकता और भाईचारे का संदेश देती है। "ईदगाह" कहानी जेहाद के मुद्दे पर भी प्रकाश डालती है। जेहाद का अर्थ है "संघर्ष" या "प्रयास"। इस कहानी में, हामिद का अपनी इच्छाओं के खिलाफ संघर्ष और अपनी दादी की देखभाल करने का प्रयास जेहाद का एक रूप है।

यह कहानी हमें सिखाती है कि जेहाद हमेशा हिंसा नहीं होता है। यह अपने आप को बेहतर बनाने और दूसरों की मदद करने का एक प्रयास भी हो सकता है। "ईदगाह" एक सरल कहानी है, लेकिन यह कई महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालती है। यह कहानी आज भी प्रासंगिक है और हमें समाज में मौजूद समस्याओं के बारे में सोचने पर मजबूर करती है।

प्रेमचंद की कहानी 'कफन' हिंदी साहित्य की एक कालजयी रचना है। यह कहानी भारतीय समाज की कुछ ऐसी सच्चाइयों को उजागर करती है, जिन पर अक्सर पर्दा डालने की कोशिश की जाती है। 'कफन' की मूल संवेदना गरीबी, भुखमरी और सामाजिक व्यवस्था की क्रूरता के इर्द-गिर्द घूमती है।

साहित्य की समीक्षा

'कफन' कहानी हिंदी साहित्य की एक कालजयी रचना है। यह कहानी भारतीय समाज की कुछ ऐसी सच्चाइयों को उजागर करती है, जिन पर अक्सर पर्दा डालने की कोशिश की जाती है। 'कफन' की मूल संवेदना गरीबी, भुखमरी और सामाजिक व्यवस्था की क्रूरता के इर्द-गिर्द घूमती है। यह कहानी आज भी प्रासंगिक है और हमें समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है। [1]

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के एक ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज के हर पहलू को छुआ है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का जीवंत चित्रण मिलता है। 'रंगभूमि' उनका एक ऐसा उपन्यास है जिसमें उन्होंने जेहाद के मुद्दे को बड़े ही संवेदनशीलता के साथ उठाया है। [2]

बाहरी जेहाद अन्याय और बुराई के खिलाफ हथियार उठाकर लड़ने को कहा जाता है। आंतरिक जेहाद अपने भीतर के बुरे विचारों और भावनाओं के खिलाफ संघर्ष करने को कहा जाता है। प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में जेहाद के दोनों पहलुओं को बखूबी दर्शाया है। उन्होंने दिखाया है कि किस प्रकार बाहरी जेहाद का इस्तेमाल निहित स्वार्थों के लिए किया जा सकता है और किस प्रकार आंतरिक जेहाद व्यक्ति को बेहतर इंसान बनाने में मदद कर सकता है। [3]

जेहाद समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर प्रेमचंद का दृष्टिकोण

प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में जेहाद के दोनों पहलुओं को दिखाकर यह संदेश दिया है कि जेहाद का सही अर्थ है अपने भीतर के बुरे विचारों और भावनाओं के खिलाफ संघर्ष करना और समाज में न्याय और शांति स्थापित करने के लिए प्रयास करना। 'रंगभूमि' उपन्यास आज भी प्रासङ्गिक है। आज भी हमारे समाज में जेहाद के नाम पर हिंसा और आतंकवाद फैलाया जा रहा है। ऐसे में प्रेमचंद का यह उपन्यास हमें जेहाद के सही अर्थ को समझने और समाज में शांति और सद्भाव स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है।

'रंगभूमि' हमें यह भी सिखाता है कि हमें किसी भी धर्म या विचारधारा को आँख मूंदकर नहीं स्वीकार करना चाहिए। हमें हर चीज को तर्क और विवेक की कसौटी पर परखना चाहिए। प्रेमचंद का यह उपन्यास हिंदी साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। यह हमें समाज के बारे में सोचने और बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

'कर्मभूमि' उपन्यास में जेहाद को एक नकारात्मक रूप में दिखाया गया है। इस उपन्यास में जेहाद का इस्तेमाल धार्मिक उन्माद और हिंसा को भड़काने के लिए किया गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में दिखाया है कि जेहाद का इस्तेमाल समाज में अशांति और अराजकता फैलाने के लिए किया जा सकता है।

'कर्मभूमि' उपन्यास ने उस समय के भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। इस उपन्यास ने लोगों को जेहाद के नकारात्मक पहलुओं के बारे में जागरूक किया। इस उपन्यास ने लोगों को यह भी समझाया कि धर्म के नाम पर हिंसा और उन्माद को बढ़ावा देना गलत है। 'कर्मभूमि' उपन्यास आज भी प्रासंगिक है। यह उपन्यास हमें सिखाता है कि हमें धर्म के नाम पर हिंसा और उन्माद को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। हमें समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रयास करना चाहिए।

'रंगभूमि' उपन्यास का मुख्य पात्र सूरदास एक अंधा व्यक्ति है जो समाज के अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है। वह एक सत्याग्रही है और गांधीवादी विचारधारा का समर्थक है। सूरदास का चरित्र आंतरिक जेहाद का प्रतीक है। वह अपने भीतर के अहंकार, क्रोध और मोह को जीतकर एक निस्वार्थ और समर्पित व्यक्ति बनता है।

उपन्यास में एक दूसरा पात्र है जॉन सेवक जो एक क्रिश्चियन मिशनरी है। वह भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने आता है। जॉन सेवक का चरित्र बाहरी जेहाद का प्रतीक है। वह अपने धर्म को श्रेष्ठ और दूसरे धर्मों को हीन समझता है। इस कारण वह कई बार हिंसक और आक्रामक हो जाता है।

'कफन' की कहानी घीसू और माधव नामक दो व्यक्तियों के इर्द-गिर्द घूमती है। दोनों ही गरीब हैं और किसी तरह अपना जीवन यापन करते हैं। घीसू का बेटा बीमार है और उसकी मृत्यु हो जाती है। घर में कफन के पैसे नहीं हैं, इसलिए घीसू

और माधव कफन के लिए पैसे मांगने जाते हैं। लेकिन उन्हें कहीं से भी मदद नहीं मिलती है। अंत में वे दोनों मिलकर गांव के जमींदार के घर से कुछ लकड़ियां चुरा लाते हैं और उन्हीं से बेटे का अंतिम संस्कार करते हैं।

'कफन' कहानी भारतीय समाज की कुछ ऐसी सच्चाइयों को उजागर करती है, जिन पर अक्सर पर्दा डालने की कोशिश की जाती है। कहानी में घीसू और माधव की गरीबी और भुखमरी का चित्रण किया गया है। दोनों ही इतने गरीब हैं कि उनके पास अपने बेटे के कफन के लिए भी पैसे नहीं हैं। कहानी में सामाजिक व्यवस्था की क्रूरता का भी चित्रण किया गया है। गांव के जमींदार और अन्य लोग घीसू और माधव की मदद करने के लिए तैयार नहीं हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद एक महान लेखक और समाज सुधारक थे। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से जेहाद और समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया और समाज को एक नई दिशा दी। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और हमें एक बेहतर समाज बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रेमचंद के जेहाद और समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाकर और लोगों को जागरूक करके एक बेहतर समाज बनाने का मार्ग दिखाया। उनके लेखन ने समाज को एक नई दिशा दी और लोगों को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित किया।

संदर्भ

- पवन के.वर्मा *बीइंग इंडियन: इनसाइड द रियल इंडिया.*(आई एस बी एन ०-४३४-०१३९१-९)
- मार्क टल्ली (Tully, Mark) *भारत में पूर्ण रोक नहीं है* (आई एस बी एन ०-१४-०१०४८०-१)
- वी एस नाइपौल (Naipaul, V.S) *India: A Million Mutinies Now*(आई एस बी एन ०-७४९३-९९२०-१)
- निक्की, ग्रिहौल्ट *इंडिया- कल्चर स्मार्ट!: अ क्विक गाइड टु कस्टम्स एंड एटिकेट* आई एस बी एन १-८५७३३-३०५-५)
- मंजरी उईल, *भारतीय संस्कृति पर विदेशी प्रभाव (c. ६०० ई.पू. ३२० ईस्वी तक)*, (आईऍसबीऍन ८१-८८६२९-६०-एक्स)
- भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं परम्पराएँ / डॉ. कुसुम डोबरियाल (ISBN: 9789394920378) - राजमंगल प्रकाशन - 2022